यीशु ने परमेश्वर के वचन सुनाकर लोगों के हृदय उत्तेजित किए

प्रार्थना:''प्रिय प्रभु, सहायता कीजिए कि जब बच्चे यह सीखते हैं कि प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं ने यीशु के विषय क्या भविष्यवाणियां कीं थीं, तो उनके हृदय उसी प्रकार उत्तेजित हो जाएं, जिस प्रकार इमाऊस के मार्ग पर दो शिष्यों के हो गए थे।''

किसी ऐसी सीखने वाली गतिविधियों का चुनाव कीजिए, जो बच्चों की आयु एवं आवश्यकता के अनुसार हो।

लूका 24:13-35 के वृतान्त पर आधारित कहानी अध्यापक द्वारा सुनाई जाए, या कोई बड़ा बच्चा हृदय उत्तेजित करने वाली इस घटना को पढ़े।

बताएं कि यीशु ने दो चेलों को अपने विषय पवित्रशास्त्र में लिखित भविष्यवाणियों को समझाया। उन शिष्यों को आनन्द हो और उन्होंने अग्नि जैसी गरमाहट हृदय में अनुभव की। परमेश्वर ने अपने प्राचीन नबियों को भविष्य में होने वाली बातों के विषय में बताया था।

ये प्रश्न पूछिये (प्रत्येक प्रश्न के समाने उत्तर दिया गया है)

- जब यीशु के उन दो लोगों ने देखा, तो क्या वे उन्हें पहचान पाए (देंखे पद 16)
- वे दोनों व्यक्ति क्यों उदास थें? (पद 20, क्योंकि यीशु की मृत्यु हो गई थी)
- यीशु के विषय उन दोनों जनों ने क्या कहा? (पद 19-23)
- उनके शोक करने के विषय यीशु ने क्या कहा? (पद 26)
- यीशु ने उन दोनों को क्या समझाया? (पद 27)
- अन्त में उन्होंने यीशु को कब पहचाना? (पद 30-31)

लूका 24:13-35 पर आधारित नाटक प्रस्तुत करें। विषय हो-चेले इमाऊस के मार्ग पर।

- आराधना सभा के अगुवे के सहयोग से लघु नाटक तैयार करें।
- नाटक की तैयारी के लिए पढ़ाने के समय का उपयोग करें।

- तैयारी में बड़े बच्चे छोटे बच्चों की मदद करें।
- युवा बच्चे या बड़े बच्चे **यीशु, भजनकार** (6 बच्चे) तथा **उद्घोषक** की भूमिकाएं निभाएं। उद्घोषक कहानी का सारांश बताता है और बच्चो को मदद करता है याद रखने के लिये कि उन्हे क्या बोलना है। भजनकार भजन सांहिता 22 जो कि नाटक मे उपयोग किया गाया है, पढ़े या सुनाए।
- छोटे बच्चे **क्लोपास** व **उसके साथी** की तथा **चेलों** की भूमिका करें।

उद्घोषक : उद्घोषक लूका 24:13-27 पर आधारित कहानी का प्रथम भाग प्रस्तुत करें, और कहें, ''क्लोयोपास ने ऐसा कहा सुनिए...''

क्लोयोपास : (चलते-चलते साथी से बात करें) ''मैं अब बहुत उदास हूं क्योंकि यीशु की मृत्यु हो गई है।'' परमेश्वर ने उसे क्यों मरने दिया।

यीशु : ''मेरे मित्रों, आप लोग चलते क्या बातें कर रहे हैं?

साथी : ''यीशु मर गया है। वह सामर्थी भविष्यवक्ता था। हम सोचते थे कि वह इस्राएल का राजा बनेगा, पर हमारे अगुवों ने उसे मार डाला। आज ही हममें से कुछ स्त्रियों ने बताया कि वह जी उठा है।''

यीशु : ''क्या तुम नहीं जानते थे कि उसे दु:ख उठाना मर जाना आवश्यक था। अब सुना कि पवित्रशास्त्र उसके विषय में क्या बताता है।''

उद्घोषक : ''यीशु ने पवित्रशास्त्र से चेलों को समझाना आरम्भ किया कि उनके कार्यों के विषय क्या लिखा है, तब उन दोनों जनों के हृदय आनन्द से उत्तेजित हो उठते हैं। अब सुनिए कि दाऊद ने भजन संहिता 22 में यीशु की क्रूस-मृत्यु के विषय क्या लिखा।''

भजनकार :

''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने उसे क्यों छोड़ दिया?''

''वे सब जो मुझे देखते हैं,
मेरा ठट्टा करते हैं, और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं,''

''अपने आप को यहोवा के वश में कर दे,
उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उससे प्रसन्न है।''

''कुकर्मियों की मण्डली मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है,
वे मेरे हाथ और पांव छेदते हैं।
मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकती हूं। वे मुझे देखते और निहारते हैं।''

''वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं,
और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं।''

उद्घोषक : लूका 24:28-35 पर आधारित नाटक का दूसरा प्रस्तुत करें। फिर यह कहें, ''अब सुनें कि क्लियोपास क्या कहता है,''

क्लियोपास :(यीशु से कहता है) ''मित्र अब बहुत देर हो चुकी है, अब आगे न जाऐं, हमारे साथ ही ठहरें।''

यीशु : ''लाओ मैं रोटी तोड़ता हूं, धन्य हो परमेश्वर इस योजना के लिए, (रोटी तोड़ने व क्लियोपास और उसके साथी को रोटी देने का अभिनय कीजिए)

क्लियोपास : चेलों से भेंट करने दौड़ पड़ते हैं और चिल्लाते हुए कहते

वह उसका साथी हैं, ''यह यीशु है, उसके चेलों को बताओ।''

चेले :हां, यह सही बात है, हमने भी उसे देखा है, वह जीवित है।''

उद्घोषक :धन्यवाद, उन सबको, जिन्होंने नाटक में सहयोग दिया।

प्रश्न :यदि बच्चों ने यह नाटक युवाओं के लिए प्रस्तुत किया है तो वे भी ऊपर लिखे प्रश्न पूछ सकते हैं।

पूछें कि और उदाहरण कौन-से हो सकते हैं जबकि आपने यीशु के बारे में सुना और आपके हृदय उत्तेजना से भर गए।(बच्चों को विभिन्न उदाहरण बताने दीजिए)

एक दिल का चित्र बनाए जिसके अन्दर आग जल रही हो। यह चित्र बच्चे आराधना के समय दिखाएं और बताएं कि यीशु हमारे हृदयों को आनन्द से भर देता है क्योंकि वह जीवित है, और उसकी आत्मा हमारे जीवन में रहती है।

यहेज्केल 36:25-26 मुखाग्र करें (छोटे बच्चे केवल पद 26 याद करें)

पद-25 : ''मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे, और मैं तुमको तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूंगा।''

पद-26 :''मैं तुमको नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूंगा।''

प्रार्थना :प्रिय प्रभु, जब हम आपके पुनरुत्थान पर ध्यान लगाते हैं तो हमारे हृदय आनन्द से भर जाते हैं, आप मृतक नहीं रह गए। आप पुनर्जीवित हो उठे, आप हममें निवास करते हैं और हमें जीवन देते हैं। हम कामना करते हैं कि आपको देखें और संघ आपके साथ रहें। हे प्रभु यीशु, शीघ्र आइए।''

Copyright 2003 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net